हिमालयी बच्चों का अख़बार

त्रैमासिक

RNI No. UTTHIN/2003/10745 वर्ष 10, अंक 103, पृष्ठ 8, देहरादून, मार्च–अप्रैल, 2020 1995 से सतत प्रकाशित

दीदी की चिट्ठी

प्यारे बच्चों,

आप सब स्वस्थ रहें, मुस्कुराते रहें और यू ही "बच्चों के अखबार" को पढ़कर आनंन्दित होते रहें। आनन्द बहुत तरह के होते हैं जैसे अपना मनपसन्द खाना खाकर हम तृप्त हो जाते हैं, अपनी पसन्द के कपड़े पहनकर मन खुश हो जाता है, किसी की मदद करके भी मन प्रसन्न हो जाता है और कई बार अच्छा पढ़कर भी खुशी होती है। कौन सा आनन्द चाहते हो तुम तय स्वयं करो।

हम सब देख रहे हैं विश्व कोरोना की चपेट में आ गया है। हर देश अपने देशवासियों की सुरक्षा के लिए अथक प्रयास कर रहे हैं। हमारे देश में भी सुरक्षा के लिए ठोस कदम उठाए जा रहे हैं। लेकिन यह तब सम्भव है जब हम सब मिलकर सतर्कता, जागरूकता और सुरक्षा को अपनाएंगे। कोरोना से जुड़े महत्वपूर्ण तथ्यों को समझेंगे और नियमों का पालन करेंगे। बच्चों से विशेष निवेदन है कि वे बड़ों की बातों को ध्यान से सुनकर पालन भी करें। स्वास्थ्य से बढ़कर तो कुछ भी नहीं है, दोस्तों।

तुम सब पाठकों की सुरक्षा की कामना करती हूँ।

तुम्हारी दीदी,
सुधा

कोरोना वायरस जागरूकता का कवच

कोरोना के लक्षण

- नाक से पानी आना
- सिरदर्द
- बुखार
- गले में दर्द
- छींके आना
- सांस लेने में कठिनाई

कोरोना हवा से नहीं फैलता है।

क्या करें?

- समय-समय पर साबुन से हाथ धोएं या सैनिटाइजर से।
- हर 15 से 20 मिनट में 2 घूंट गरम पानी पिएं।
- बाहर का खाना न खांए।
- ठंडी खाने पीने की चीजों से परहेज करें।

क्या न करें?

- भीड़-भाड़ वाले इलाकों में न जाएं।
- छींकने वाले व्यक्ति से 1 मीटर की दूरी बनाएं।
- खासी, जुखाम होने पर फेस मास्क पहनें।
- हाथ न मिलाएं, नमस्ते करें।

हेल्पलाइन (उत्तराखण्ड राज्य के लिए) 104

कोरोना के लक्षण महसूस होने पर 104 पर संपर्क करें।

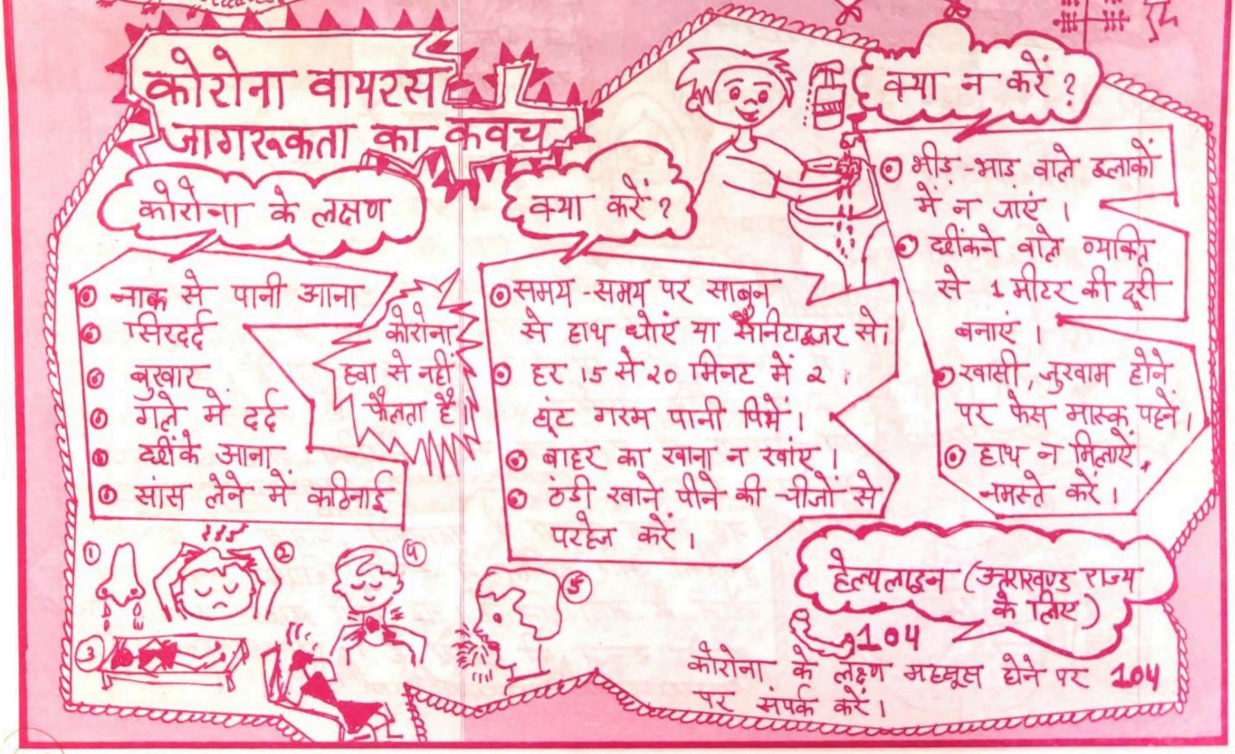

विज्ञान के चमत्कार

कोबरा प्लांट क्या है ?

कैलिफोर्निया कोबरा प्लांट एक कीटभक्षी पौधा है। यह तरह-तरह के छोटे-मोटे कीटों को अपना भोजन बनाता है। अपनी सुरक्षा के लिए वह अपना फन उठाकर खड़ा रहता है। जैसे कोबरा खड़ा रहता है। ऐसा ही एक और पौधा है हमारे देश में। एरिसैमा (स्नेक प्लांट) पौधा

हिमालय में केदारनाथ के आसपास मिलता है। दूर से देखने पर लगता है जैसे कोई नाग अपना फन उठाए चेतावनी की मुद्रा में खड़ा हो। इस पर नाग जैसे शल्क [?] और बाहर लटकती जीभ भी होती है। यह सब प्रकृति की देन है। इन पौधों को अपनी सुरक्षा को बरकरार रखने के लिए।

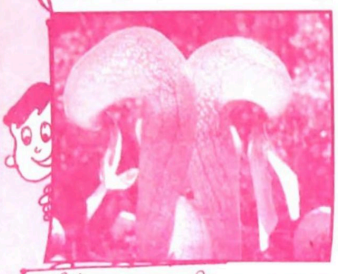

साभार : जीवजगत के हमसफर पुस्तिका, किशोर पँवार द्वारा लिखित से ली गई है।

20 मार्च ↔ विश्व गौरैया दिवस

22 मार्च ↔ विश्व जल दिवस

25 मार्च ↔ अर्थ आवर दिवस

22 अप्रैल ↔ पृथ्वी दिवस

ईकोफ्रेंडली मेन्सयू बर्नर (Ecofriendly Mensuburner)

मेन्सयू बर्नर एक उपकरण है। यह सेनेटरी नैपकिन डिस्पोजल यूनिट है। यह उपयोग हो चुके सेनेटरी पैड को खाद में बदलेगा। हम लोग सेनेटरी पैड को इस्तेमाल के बाद कागज या पॉलीथिन में लपेटकर कूड़े में डाल देते हैं। यह पर्यावरण प्रिय तरीका नहीं है।

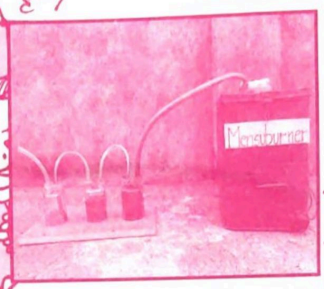

यह टिन की चद्दर वाला डिब्बा है। इसके अन्दर के हिस्से में मिट्टी की मोटी परत चढ़ाई गई है। मेन्सयू बर्नर में थर्मोस्टेट के साथ 1500 वाट क्षमता का क्वाइल हीटर लगाया गया है। जब सेनेटरी पैड को इसमें डालते हैं तो उचित तापमान में वह जल जाता है। जब पैड जलता है तो सल्फर डाइऑक्साइड (SO_2) और नाइट्रोजन डाइऑक्साइड (NO_2) निकलती है।

जिन्हें चारकोल (कार्बन), पोटैशियम डाइक्रोमेट और फेरस सल्फेट के जार में रखे मिश्रण से गुजारा जाता है। इससे यह गैसें हानिकारक नहीं रहती। नैपकिन के जलने के बाद जो राख मिलती है उसे खाद के रूप में इस्तेमाल कर सकते हैं। चाहे तो राख में गुड़, सहजन और नीम के पत्ते मिलाकर जैविक खाद बना लें। मेन्सयू बर्नर में नैपकिन तीन मिनट में नष्ट हो जाता है। अभी तो एक-एक करके नैपकिन डालने पड़ते हैं। लेकिन जब सेंसर लग जाएगा तो एक-एक करके नैपकिन नष्ट हो जाएगा। अपनेआप होगा।

यह मॉडल बनाया है पठानकोट, पंजाब की छात्राएं कृतिका और हर्षिता ने अपनी शिक्षिका कंचन गुलेरिया मैडम के मार्गदर्शन में। यह दोनों ब्रदर्स द किंग [?] कॉन्वेंट स्कूल की छात्राएं हैं।

गंगा पर बांध का बंधन
(भाग-1)

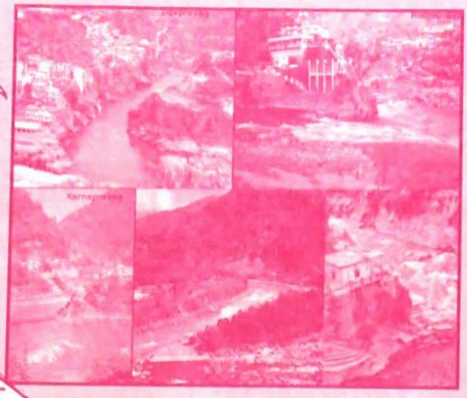

क्या बड़े बांध गंगा को हानि पहुंचा रहे हैं?

बड़े बांध सहायक हैं गंगा के प्रदूषण में। यहां मैं उत्तराखण्ड के टिहरी डैम का उदाहरण दे रही हूं जो भागिरथी नदी पर बना है।

उत्तराखण्ड में टिहरी और श्रीनगर में गंगा का जल साफ है। फिर भी बांध से प्रदूषण कैसे? यही सोच रहे हो। बताती हूं, बताती हूं।

हम सब जानते हैं कि हमारे देश की अधिकांश जनसंख्या जीविका के लिए कृषि पर निर्भर है। यहां सिंचाई, नौसंचालन, जल विद्युत निर्माण में नदियों का महत्व अहम है।

बांधों की क्या भूमिका है?

भारत में बांधों का निर्माण प्राचीन काल से ही आरम्भ हो गया था। दक्षिण भारत में मिट्टी के मध्यम ऊँचाई के बांधों का निर्माण किया गया। भारत में बांधों का निर्माण मुख्यत: सिंचाई, जल विद्युत उत्पादन, बाढ़ नियंत्रण एवं जल आपूर्ति के लिए किया जाता है।

① मछलियों की प्रजाति (species) व संख्या (number) में गिरावट :

पहले भी मैंने बताया था कि मछलियां गंदगी को खाकर जल को स्वच्छ रखती हैं। कई मछलियों की प्रजातियां एक नदी से दूसरी नदी में प्रवास (migrate) करती हैं, जैसे उत्तराखण्ड की महासीर (mahaseer) वह अण्डे देने के लिए (spawning) ठण्डे इलाकों की ओर जाती हैं। अण्डे से बच्चे मेरे प्रवाह के साथ नीचे मैदानों में आ जाते हैं। यानि

बच्चे युवा मैदानी इलाकों में होते हैं। अण्डे देने के लिए वे फिर प्रवाह के विपरीत दिशा में यानि पहाड़ों की ओर जाते हैं। यानी बच्चे युवा मैदानी इलाकों में होते हैं। अण्डे देने के लिए वे फिर प्रवाह के विपरीत दिशा में यानि पहाड़ों की ओर जाते हैं।

मैं गंगा मानती हूं कि बांध हमारी प्रगति का सूचक हैं। वे तुम मानवों की बहुत सारी जरूरतों की पूर्ति करते हैं। जैसे बिजली हम सबकी जरूरत है। अंधकार में रोशनी पैदा करके हमारी आवश्यकताओं की पूर्ति करती है, बिजली रानी। बिजली नहीं, तो कैसी प्रगति? है तो बात सच। पर क्या जल के ही पास बिजली बनाने की क्षमता है? सोचो, सोचो ज्ञानी मानव। सूर्य देव और पवन देव भी तो हैं। बिजली बनाने के लिए क्या तुम उनकी सहायता नहीं ले सकते? आज विज्ञान ने पवन ऊर्जा और सूर्य ऊर्जा से भी बिजली पैदा कर ली है। ऐसा करने से उन्हें कोई हानि भी नहीं पहुंचेगी। मेरे ऊपर तो जिम्मेदारी है। अपने जल को पवित्र भी रखना है और अपनी जैव विविधता (biodiversity) को बचाना भी है। जैव विविधता की सुरक्षा मेरे भाई बहनों (जलीय जीव व जलीय पौधों) के जीवित रहने से ही हो पाएगी। और मेरा छोटा भाई निंजा (बैक्टीरियो फेज वायरस) बताया था ना उसके बारे में पिछले अंको में। इन सब का जीवन मुझ पर निर्भर है और मैं (गंगा) उन पर। यही मेरी ताकत हैं जिनकी वजह से मैं स्वयं जल शुद्धिकरण की क्षमता रखती हूं। जरूर तुम सब के मन में यह विचार आ रहा होगा कि बांध से कैसे मुझे हानि पहुंचेगी और मेरा जल प्रदूषित होगा? बताती हूँ जरा धैर्य रखो।

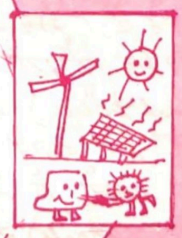

॥ नमामि गंगे ॥

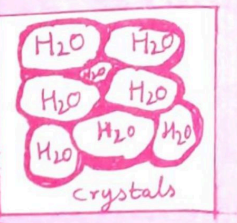

वैज्ञानिकों ने गंगा जल के इन समूहों के आकार (crystals) के अंदर आध्यात्मिक शक्ति देखी। जो ऊर्जा के उच्च स्तर को दर्शाता है। उन्होंने इन समूहों की तस्वीर भी खींची। बहते पानी के समूहों की तस्वीर बहुत सुंदर थी और वे विभिन्न आकारों के थे। पानी का प्रवाह भी इन आकारों में अंतर लाता है।

वैज्ञानिकों ने देखा कि गंगा का जल बद्रीनाथ धाम और केदारनाथ मंदिर से निकल रही आध्यात्मिक किरणों से प्रभावित है। मंत्रों में ऊर्जा (energy) होती है जो गंगा के जल में है। ऋषियों और वेदाचार्यों के लगातार मंत्रों और तप से भी मेरा (गंगा) जल ऊर्जायमान हो गया है। मंत्रों के उच्चारण से आस-पास एक दिव्य ऊर्जा पैदा हो जाती है। मेरे जल ने करोड़ों सालों से उस ऊर्जा को अपने जल में सोख लिया है। इन मंत्रों की ऊर्जा की वजह से गंगा जल में स्पंदन (vibration) है और वह जल अभिमंत्रित भी है।

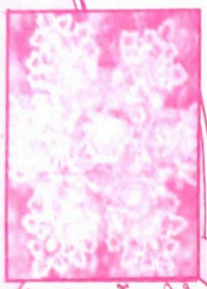

स्वच्छ जल में पानी के क्रिस्टल

बिजली उत्पन्न करने के लिए जब मेरा जल जल विद्युत टर्बाइनों से गुजरता है तो मेरे सुंदर क्रिस्टल बिखर जाते हैं। मेरा जल टर्बाइन की ब्लेड से टकराकर विघटित हो जाता है और मेरा जल अपनी आध्यात्मिक ऊर्जा का प्रभामंडल भी खो देता है। यह पता चला एक विशेष प्रकार की फोटोग्राफी क्रिलियन फोटो से। टिहरी बांध के ऊपर के पानी के समूह की क्रिलियन फोटो और बांध के नीचे टरबाइन से मेरा जल गुजरने के बाद के समूह का फोटो बहुत अलग पाया गया। मेरे क्रिस्टल के चारों ओर का प्रभामंडल भी गायब था और पानी ने अपनी आंतरिक ऊर्जा भी खो दी थी।

स्वच्छ क्रिस्टल

टिहरी के ऊपर crystal

पर्यावरणविद् झुनझुनवाला, वैज्ञानिक व शोधकर्ताओं ने बांधों से मुझ पर पड़ रहे नकारात्मक प्रभाव पर विचार विमर्श किया है, इन सब का कहना है कि नदियों के पानी पर जितना नियंत्रण करेंगे, जितना सुरंगों (tunnels) में डालेंगे, उतना ही गंगा अपना गुण खोएगी। साथ ही जलीय जीवन पर भी प्रभाव पड़ेगा। मैंने सुना है कि केन्द्र सरकार गंगा की छह सहायक नदियों - भागीरथी, मंदाकिनी, पिंडर, नंदाकिनी, धौलीगंगा और अलकनंदा पर नई जल विद्युत परियोजना नहीं बनाएगी।

टिहरी के नीचे crystal

बांध गंगा की जैव विविधता (biodiversity) को नुकसान पहुंचा रहे हैं जिससे पारिस्थितिकी तंत्र (Ecosystem) के कारकों पर भी असर पड़ रहा है। और फलस्वरूप मेरा (गंगा) स्वास्थ्य प्रभावित हो रहा है। मेरे जल की आध्यात्मिक शक्ति (spiritual power) मेरी रूह है। जल विद्युत परियोजनाएं गंगा की आध्यात्मिक शक्ति को क्षति पहुंचा रहे हैं। अब बिना ऊर्जा वाले गंगा जल में डुबकी लगाने से लाभ होगा या नहीं? यह फैसला मैं तुम मानवों पर छोड़ रही हूं। मेरी आध्यात्मिक शक्ति (spiritual power) के संरक्षण पर ध्यान देना भी बहुत जरूरी है।

मेरे बहाव को मुक्त छोड़ दिया जाए। यह मेरा और मेरे परिवार का आप मानवों से विनम्र निवेदन है। ना ही हम बांधों से बंधकर और ना ही सुरंगों (tunnels) से गुजरकर गुजरना चाहते हैं। पत्थरों से टकराकर अपनी नाद के साथ चलना हमें अच्छा लगता है। स्वतंत्र अविरल बहाव ही हमारी पहचान है। जिसे तुम अपने स्वार्थ के लिए बांधने का प्रयास कर रहे हो।

डा० सुधा शर्मा

बाल गंगा प्रहरी

रासायनिक रंगों से प्रकृति को बचाएं

छात्राओं की प्रतिक्रियाएं

आपको आज की कार्यशाला क्यों अच्छी लगी?

① आज हमें बहुत कुछ सीखने को मिला है।
② अब से होली पर हम घर के रंग बनाया करेंगे।
③ पैसे खर्च नहीं होते हैं। घर पर रंग बना सकते हैं।
④ इन रंगो में कैमिकल नहीं मिले होते हैं। यह ज्यादा महंगे नहीं होते हैं।
⑤ हमें अलग-2 रंग बनाना अच्छा लगा।
⑥ यह रंग हमारे स्वास्थ्य के लिए अच्छे रहते हैं।
⑦ हमें रंगो को बनाना अच्छी से समझ आया।
⑧ जब होली पर हम अपने दोस्तों के रंग लगाते हैं तो रंग से उनको बहुत सी परेशानी हो जाती है। इसलिए होली पर घर के रंग बनाएगें।
⑨ मैंने पेड-पौधों से बनने वाले रंगों के बारे में सीखा।
⑩ हम केमिकल से बच सकें। बनाना भी आसान है।
⑪ मैंने नई-नई चीजें सीखीं। मुझे प्रकृति के बारे में जानकारी मिली।
⑫ हमें प्राकृति कलरों के बारे में पता चला है और chemical कलरों के बारे में पता चला है। इनसे हमें हानि ही हानि होती है।
⑬ हमें प्राकृतिक रंगो के फायदे पता चले।
⑭ इन रंगों को हम आसानी से घर पर बना सकते हैं।
⑮ जो भी सीखा वो हमारी त्वचा को नुकसान नहीं करेगा।
⑯ हम market से रंग नहीं लाएगें और लोगों को भी रंग बनाना सिखा सकते हैं।
⑰ इन रंगों से हमारा पर्यावरण दूषित नहीं होगा।
⑱ हमने रंग बनाने सीखें जिससे हम केमिकल वाले रंगों से बच सके और हमें कोई हानि भी ना हो।
⑲ आज की कार्यशाला मुझे बहुत अच्छी लगी। क्योंकि हमारे विद्यालय में अभी तक आप जैसे लोगों से भेंट नहीं हुयी है। जिन्होंने हमें प्राकृतिक रंग बनाने सिखायें हैं। आपका बहुत-बहुत धन्यवाद।
⑳ पर्यावरण तथा जल की स्वच्छता के बारे में पता चला।

㉑ मुझे ऐसा महसूस हुआ जैसे मैं प्रकृति के करीब आ गई हूँ। मुझे प्रकृति की निराशा का पता चला कि वह क्यों दुखी है। हम प्रकृति को इतना कष्ट पहुंचाते हैं फिर भी वह हमें सब कुछ देती है।
㉒ हम प्रकृति के साथ खिलवाड करते हैं लेकिन प्रकृति कभी हमारे साथ खिलवाड नहीं करती हैं।
㉓ आज तक हम केमिकल रंगों से होली खेलते थे। लेकिन अब हम प्राकृतिक रंगो से होली खेलेंगें।
㉔ कार्यशाला में हमें ऐसा कुछ पता चला जिसके बारे में हम जानते तो थे किंतु हमने कभी ऐसा सोचा नहीं था कि हम इसका प्रयोग अपने वास्तविक जीवन में कर सकते हैं।
㉕ पेड़ों से benefits की जानकारी मिली।
㉖ जो हमने जाना वह हमारे लिए बहुत फायदेमंद रहेगा।
㉗ जब हम पर पैसे नहीं होते हैं तो हम रंग नहीं खरीद पाते हैं। तो अब घर पर रंग बनाकर होली खेलेंगे।

Padada Padadi
Inter College,
Anoopshahr,
Bulandshahr
U.P.

हिमालयी,
बच्चों का अखबार

कार्यशाला : प्राकृतिक होली के रंग बनाना

① परदादा-परदादी शिक्षण संस्थान
② प्रा. वि. हसनपुर बांगर
③ पूर्व मा. वि. हसनपुर बांगर
④ सरस्वती विद्या मंदिर स्कूल, नरौरा, बुलंदशहर
⑤ प्रा. वि., सिरोरा बांगर, बुलंदशहर
⑥ पूर्व मा. वि., सिरोरा, बांगर
⑦ श्री राम पब्लिक स्कूल, उदयमाडी
⑧ Bhagirathi Bedan inter college, Ramghat
⑨ Shri Devtrya Adarsh inter college, Dibai
⑩ Irrigation inter college, Narora
⑪ Raghunath Barasahni inter college, Rajghat

बाल प्रतिक्रियाएं

हमें रासायनिक रंग लगाकर नदी में नहीं नहाना चाहिए। ऐसा करने से हमारे जलीय जीवों को हानी पहुंचती है। जैसे मगरमच्छ, डाल्फिन, कछुआ, मेंढक, मछली आदि को हानियाँ पहुंचती है। ✪ बबीता कुमारी, कक्षा-8, पूर्व मा. वि. हसनपुर बांगर, उ.प्र.

आज हमें सुधा दीदी के साथ रंग बनाना बहुत अच्छा लगा। हमें रासायनिक रंगों का प्रयोग नहीं करना चाहिए। हमें घर के ही सामानों से रंग बनाना चाहिए। ✪ मनीष कुमार, कक्षा-7, पूर्व मा. वि., हसनपुर बांगर, उ.प्र.

आज की कार्यशाला हमें इसलिए अच्छी लगी कि आपने हमें ज्ञान कराया और अच्छी बातें बतायी तथा जो हमें नहीं पता था वो भी आपने बताया तथा सबसे महत्वपूर्ण बात आज के समय में कोई किसी को भी 1 मिनट का भी समय नहीं देता और आप लोग अपनी पूरी जिन्दगी इस महान कार्य में लगा रहे हैं। यह बात अपने आप में बहुत बड़ी है। और आप लोग वन्य जीवों के बारे में इतना कुछ सोच रहे हैं। आप इतना कर रहे हैं तो आगे चलकर हम भी ऐसे महान कार्य में ज्यादा समय देंगे। आपकी कार्यशाला वास्तव में बहुत अच्छी थी। रंग बनाने का सबसे सरल तरीका आपने बताया। तथा अपने इसको हम हमेशा याद रखेंगे। इसको हम घर में बड़ों तथा छोटों को भी बतायेंगे। आप का तरीका तथा बोली बहुत ही अच्छी है। ✪ नेहा तोमर, कक्षा-9, महाराज श्री जीवन दत्त जी सरस्वती विद्या मन्दिर, नरौरा, उ.प्र.

हमें सुधा दीदी के हाथों से बनाए रंगों का रंग अच्छा लगा। आज उन्होंने हमें रासायनिक रंगों से बचाया। ✪ गौरव कुमार, कक्षा-7, पूर्व मा. वि., हसनपुर बांगर

प्राकृतिक रंग पेड़-पौधों से भी बनाए जाते हैं। फूलों से भी बनाए जाते हैं। इनमें कोई भी पैसा नहीं जाता है और ये बहुत ही मन को सुगन्धित करते हैं। इन रंगों को लगाकर अगर हम गंगा में नहाने जाए तो गंगा का जल भी दूषित नहीं होता है। जलीय जीव भी ठीक रहते हैं इसलिए ये हमें अच्छा लगा। ✪ दीपक कुमार, कक्षा-8, U.P.S., Hasanpur Bangar, U.P.

सुधा मैडम ने हमें बहुत ही प्यार और स्नेह के साथ सिखाया। हमें मैडम का व्यवहार बहुत अच्छा लगा। ✪ सागर सैनी, कक्षा-8, पूर्व मा. वि., सिरोरा बांगर, उ.प्र.

प्राकृतिक रंगों से कोई भी नुकसान नहीं होता है। और यह रंग वातावरण को प्रदूषित नहीं करते हैं। और इस रंग को छुड़ाने के लिए कम पानी का प्रयोग होता है और जीवों को बचाया जा सकता है। ✪ कपिल कुमार, कक्षा-9, सरस्वती विद्या मन्दिर, नरौरा, उ.प्र.

आज हमें लाल रंग, पीला रंग, हरा रंग और काला रंग बनाना अच्छा लगा। ✪ दिपिका कुमारी, कक्षा-7, भावना कुमारी, कक्षा-6, ज्योति रानी, कक्षा-7, U.P.S. Hasanpur Bangar, U.P.

आज रंग बनाना अच्छा लगा। मैडम का सिखाने का तरीका बहुत अच्छा था। आज की कार्यशाला में हमें पता लगा कि पेड़ के सभी भागों से प्राकृतिक रंग बनाये जा सकते हैं। ✪ हिमजीत, कक्षा-7, पूर्व मा. वि., सिरोरा बांगर, उ.प्र.

इधर उधर से....

बायो प्लास्टिक : पक्षियों के पंख से..

वैकाटो विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने पक्षियों के पंखों से प्लास्टिक बनाने की विधि खोज निकाली है। उन्होंने इसे बायो प्लास्टिक का नाम दिया है क्योंकि यह पर्यावरण प्रेमी है और इस्तेमाल के बाद जैविक रूप से नष्ट हो जाएगा। इसे कई कामों में जैसे बीज रखने वाली ट्रे, गमले बनाने, प्लास्टिक शीटिंग आदि कामों में इस्तेमाल किया जाएगा। यह प्लास्टिक दूध की थैली, बोतल और सुपर बाजार में इस्तेमाल होने वाली प्लास्टिक की थैली जैसा मजबूत होगा। यह प्लास्टिक वातावरण प्रेमी है।

ड्रोन : मगरमच्छ व घड़ियाल की गिनती

नेपाल बॉर्डर से हरिद्वार तक मगरमच्छों व घड़ियालों की गिनती ड्रोन से की जाएगी। इस गिनती से पता चलेगा कि उत्तराखण्ड में कितने मगरमच्छ व घड़ियाल हैं। उत्तराखण्ड की फॉरेस्ट ड्रोन ने यह ड्रोन तैयार किया है।

नदियों, जलाशयों व बांधों के क्षेत्रों में पानी के बहाव के अनुसार ड्रोन फिक्स होंगे। पहले से ही इनकी दूरी तय होगी और एक समय में ही फोटो व वीडियोग्राफी की जाएगी। फिर इनका विश्लेषण करके मगरमच्छ व घड़ियालों की संख्या निकाली जाएगी। यह कार्य होगा 6370 वर्ग किलोमीटर के क्षेत्र में। उत्तराखण्ड देश में पहला राज्य होगा जहां मगरमच्छ व घड़ियालों की गणना ड्रोन से होगी।

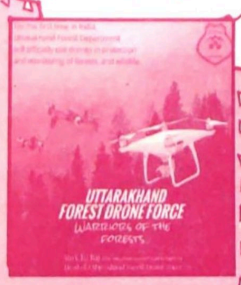

विभिन्नता में एकता दर्शाते मिट्टी के बर्तन

यह माटी के बर्तन कुछ खास हैं। क्योंकि इनमें गुजरात, महाराष्ट्र, दिल्ली, राजस्थान और म०प्र० की मिट्टी की महक है। इतने राज्यों की खूबी जो है इन बर्तनों में तो खास तो होंगे ही जनाब। यह बर्तन सेहत के लिए भी अच्छे हैं और पर्यावरण की सेहत का भी ध्यान रखते हैं।

गुजरात और महाराष्ट्र की काली मिट्टी से बर्तनों को आकार दिया जाता है। बर्तनों में मजबूती लाल मिट्टी से आती है। बर्तनों में चमक बीकानेर की भूरी मिट्टी से आती है। बर्तनों की मजबूती के लिए नदियों के किनारे की पीली मिट्टी का भी उपयोग किया जाता है।

जब आप इन बर्तनों को चूल्हे में रखें तो पहले तेल या पानी डालकर रखें। इन बर्तनों में तैयार भोजन के पोषक तत्व 80 प्रतिशत सलामत रहते हैं। क्योंकि ताप का प्रभाव उन पर सीधा नहीं पड़ता है। यह बर्तन दो-तीन साल चलते हैं। धोने के लिए साबुन की बजाय पानी में नींबू की बूंदे डालकर या राख से साफ करें।

यह कारोबार मुरादाबाद, उ०प्र० के युवा उद्यमी देव सोलंकी का है। उन्होंने खुर्जा में इन बर्तनों का उत्पादन शुरू किया था। अब वह मुरादाबाद से देश विदेश यह बर्तन उपलब्ध करवा रहे हैं। देश के महानगर, अमेरिका, दुबई, सिंगापुर, मलेशिया और न्यूजीलैंड सहित अन्य देशों तक यह बर्तन पहुंच रहे हैं। बर्तनों की श्रृंखला में हैं : प्रेशर कुकर, दाल हांडी, डिनर सेट, हॉट डोंगा, चाय की केतली, बोतल, चम्मच, कटोरी, जग, कप-प्याली, थाली, गिलास आदि।

RNI No. UTTHIN/2003/10745

कविताएँ

प्यारे बच्चे

कितने भोले कितने अच्छे,
सुखद मनोहर प्यारे बच्चे,
मीठी वाणी सहज सरल है,
इनसे सबको प्यार प्रबल है।
नही बनावट द्वेष जानते,
प्यार और अपनत्व मानते।
फूलों जैसा कोमल तन है,
नहीं कलुषता निर्मल मन है।
जहां कहीं यह मौका पाते,
लगे खेलने धूम मचाते।
करते सब हैं इन्हे दुलार,
लगता बचपन सुखद अपार।
रहती अधर मधुर मुस्कान,
बनाते यही राष्ट्र की शान।
भेद भाव सब दूर भगाते,
जन मन में खुशहाली लाते।
मन से सब मतभेद भुलाते,
सदा सभी को मीत बनाते।

श्री कैलाश त्रिपाठी
साहित्यकार, अजीतमल
औरैया, उ०प्र०

सड़क सुरक्षा

सड़क सुरक्षा जीवन के लिए होती है,
सड़क पर अक्सर दुर्घटना होती है।
सड़क सुरक्षा नियम तुम्हे आज हम बताते हैं।
सड़को पर कैसे चलना है ये समझाते हैं।
ड्राइविंग करने से पहले लाइसेन्स बनाते हैं।
ट्रैफिक अफसर हमे नियम बताते हैं।
हेलमेट - हेलमेट सिर पर हो हेलमेट
हेलमेट से जीवन सुरक्षा होती है।
सड़को पर अकसर दुर्घटना होती है।
सड़क सुरक्षा जीवन के लिए होती है।
पीकर शराब मोटर गाड़ी न चलाए।
बत्ती हो लाल तो चौक पर रूक जाऐ।
ओवरटेक करे कोई तो साइड देनी चाहिए।
फोन की लीड़ भूलकर भी कानो में न लगाऐं।
टेंशन - टेंशन - टेंशन . . . .
हर पल टेंशन . . . . .
इस टेंशन के कारण भी दुर्घटना होती है।
सड़को पर अक्सर दुर्घटना होती है।
सड़क सुरक्षा जीवन के लिए होती है।
सड़को पर अक्सर दुर्घटना होती है।

सिमरन जहां, वंशीका कुमारी
कक्षा - 6, रा०उ०प्रा०वि०, मियांवाला
देहरादून

कोरोना वायरस

वायरस की आयु

यह वायरस कितनी देर जिन्दा रह सकता है :-
(a) धातू की रैलिंग, दरवाजों के हैंडिल या नल पर ⟹ 12 घंटे
(b) कपड़ो पर ⟹ 9 घंटे
(c) शरीर पर ⟹ मात्र 10 मिनट
यह हवा से नहीं फैलता है।

लक्षण	कोरोना	फ्लू	सर्दी
① सूखी खासी	अकसर	अकसर	बेहद कम
② बुखार	अकसर	अकसर	×
③ गले मे खराश	कभी-कभी	कभी-कभी	अकसर
④ सांस में तकलीफ	कभी-कभी	×	×
⑤ सिर दर्द	कभी-कभी	अकसर	×
⑥ बदन दर्द	अकसर	अकसर	अकसर
⑦ छींक	×	×	अकसर
⑧ थकावट	कभी-कभी	अकसर	कभी-कभी
⑨ दस्त	×	कभी-कभी	×

BOOK POST CONTAINING PERIODICALS

हिमालयी बच्चों का अखबार

RNI NO. UTTHIN/2003/10745

सेवा में,
....
....
....
....
....

स्वामी मुद्रक व प्रकाशक डॉ अनिल प्रकाश जोशी द्वारा शिखर इन्टरप्राइजेज सत्यभामा निवास, तरूण विहार देहरादून दूरभाष : 0135–2532753 से मुद्रित तथा हैस्को ग्राम शुक्लापुर, पो.ऑ–अम्बीवाला, वाया प्रेमनगर, देहरादून से प्रकाशित।

सम्पादक : डा. सुधा कबटियाल
पता : डा. सुधा कबटियाल
ग्राम–मियांवाला, पो.ऑ.–हर्रावाला,
देहरादून–248001

सहयोग टीम : समस्त बच्चे

हमारा पता : बच्चों का अखबार
हैस्को गाँव
ग्राम शुक्लापुर, पो.ऑ.–अम्बीवाला,
वाया प्रेमनगर, देहरादून–248001

सीमित प्रचार प्रसार हेतु

भारतीय वन्यजीव संस्थान
Wildlife Institute of India

राष्ट्रीय स्वच्छ गंगा मिशन
National Mission for Clean Ganga

सामार – गंगा नदी के बेसिन में जलीय जीवों के संरक्षण एवं पारिस्थितिकीय सेवाओं के रखरखाव के लिये नियोजन एवं प्रबन्धन द्वारा उत्प्रेरित एवं सहयोग

HESCO